9

आदिवासी एवं लोककला के संदर्भ में सृजनात्मक डिजाइन

डिजाइन, (आलेखन) मानव अनुभव, कौशल एवं ज्ञान का वह क्षेत्र है जिसकी सहायता से मानव अपने पर्यावरण को अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लेता है। हम मधुबनी चित्र, भील कला एवं दक्षिण भारतीय कोलम जैसी कलाओं को आदिवासी एवं लोककला के रूपों में देखेंगे। हम कुछ नया सृजित करने हेतु इन सभी लोक कलारूपों के अभिप्रायों का प्रयोग करेंगे। आलेखन को हम एक ऐसे क्रियाकलाप के रूप में देख सकते हैं जिसके द्वारा किसी विचार को एक उपयोगी एवं आलंकारिक वस्तु के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हम इन लोककला के अभिप्रायों की पुनरावृति एवं पुन:नियोजन द्वारा अपने विचारों को एक नई अभिव्यक्ति प्रदान करेंगे।

ऐसी मान्यता है कि मधुबनी चित्र (जिन्हें मिथिला चित्र भी कहा जाता है।) का आरंभ रामायण काल में हुआ था। यहाँ के राजा जनक ने अपनी बेटी सीता के लिए श्रीराम से विवाह के अवसर पर लोगों से अपने घरों की दीवारों एवं प्रांगणों को चित्रांकित करने के लिए कहा था। मधुबनी चित्र एक निश्चित भू-भाग तक ही सीमित रही यद्यपि यह चित्र कौशल सदियों से चला आ रहा है। इन चित्रों की विषय-वस्तु एवं शैली लगभग समान ही रही है।

पश्चिमी एवं मध्य भारत के गौंड आदिवासियों के बाद भील भारत का दूसरा सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है। भारत के आदिवासियों का इतिहास, आर्यों के आगमन से भी पुराना है। वे सदियों से इस महाद्वीप के पर्वतीय क्षेत्रों पर राज्य करते रहे हैं। भारत के अन्य आदिवासियों की भांति भील आदिवासी भी प्रकृति के निकट रहे हैं एवं सामान्यत: कृषक जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी कला के केन्द्र में उनका प्राकृतिक पर्यावरण होता है जो उनके गीतों, अनुष्ठानों एवं लोक किंवदन्तियाँ से युक्त होता है।

कोलम, ब्राह्मण संस्कृति से सम्बद्ध स्त्रियों द्वारा की जाने वाली वह सुंदर कला है जिसका उद्भव दक्षिण भारत में 300 वर्ष से भी पहले हुआ था। कोलम का उद्देश्य केवल सजावट नहीं है, विश्वास किया जाता है कि इनसे घर में समृद्धि आती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत के विभिन्न आदिवासी एवं लोक कलारूपों में अंतर कर सकेंगे;
- पुस्तक में दी गई लोक चित्रकला शैलियों में प्रयुक्त होने वाले आकारों, प्रतीकों एवं अभिप्रायों को पहचान सकेंगे;
- आदिवासी एवं लोक कलारूपों के सृजन की मूल अवधारणा को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न पैटर्न की रचना कर सकेंगे;
- इन कलारूपों की पुरानी पारम्परिक तकनीक एवं आधुनिक दृष्टिकोण में अंतर कर सकेंगे;
- ज्यामितिक आकारों से अलग शैली बना सकेंगे;
- डिजाइन बनाने में लोक चिह्न/अभिप्रायों, प्रतीकों एवं संरचनाओं का प्रयोग कर सकेंगे।

9.1 मधुबनी चित्र

मधुबनी अथवा मिथिला चित्र परम्परागत रूप से वर्तमान मधुबनी, दरभंगा नगरों तथा मिथिला क्षेत्र के अन्य गाँवों में रहने वाली महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। ये चित्र, केवल आकर्षक रेखांकन ही नहीं हैं, बल्कि इनमें ग्रामीणों द्वारा दैनिक अनुष्ठानों एवं उनके प्रकृति से साहचार्य से सम्बन्धित

चित्र 9.1

किंवदन्तियों की अभिव्यक्ति भी होती है। पारम्परिक रूप से चित्रांकन, गोबर मिट्टी से लिपी दीवारों पर की जाती है जिन्हें पहले चावल के आटे के घोल से रंगा जाता है। मधुबनी चित्रों में द्विआयामी छवियाँ चित्रित की जाती हैं। जो रंग काम में लाए जाते हैं उन्हें वनस्पतियों से प्राप्त किया जाता है। सजावटी पुष्प संरचनाएँ, बड़े नेत्रों वाली आकृतियाँ एवं हाशिए चित्रित किए जाते हैं। शैली के स्वभाव के अुनरूप प्राकृतिक एवं पौराणिक आकृतियाँ भी चित्रित की जाती हैं।

चित्र 9.2

सबसे अधिक चित्रित की जाने वाली विषयवस्तु है हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र जैसे कृष्ण, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्य एवं चंद्र तथा तुलसी का पौधा, विवाह के दृश्य एवं उनके आस-पास हो रही घटनाएँ। खाली स्थानों में फूल-पत्तियाँ एवं पशु-पक्षियों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इस शैली के चित्रों में रिक्त स्थान नहीं छोड़ा जाता। रंग सपाट भरे जाते हैं, उनमें शेडिंग नहीं की जाती। आकृतियों की बाहरी रेखा दोहरी बनाई जाती है और उनमें मध्य के स्थान को क्रास अथवा छोटी सीधी रेखाओं की पुनरावृति से भर दिया जाता है। केवल बाहरी रेखाओं द्वारा बनाए जाने वाले चित्रों में कोई रंग नहीं भरा जाता केवल रेखाओं से ही चित्रण पूर्ण किया जाता है। वर्तमान में व्यावसायिक उद्देश्यों से यह चित्र कागज, कपड़ा एवं कैनवास पर भी बनाए जा रहे हैं।

मधुबनी चित्रों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार हैं : मानव आकृतियाँ, पक्षी, हाशिए, कृष्ण, मछली, सूर्य देव, पुष्प आकार एवं वृक्ष।

9.2 भील कला

पिठौरा भील चित्रों की परम्परा घरों में चित्रण की जाने वाली कला है। किंवदन्तियों एवं लोक विश्वासों में प्रचलित दैवीय छवियों से दीवारों एवं छत पर अलंकरण किया जाता है। प्रत्येक वर्ष घर की भीतरी दीवारों पर मिट्टी से उभारदार भित्ति अलंकरण एवं चित्र बनाए जाते हैं। चित्रकारी

हेतु रंग फूल-पत्तियों जैसे प्राकृतिक साधनों से प्राप्त किए जाते हैं तथा ब्रश नीम की टहनी से बना लिए जाते हैं। इन भित्ति अलंकरणों में बदलते मौसम उनकी रक्षा करने वाले देवी-देवता तथा अच्छी फसल आदि प्रतिबिम्बित होते हैं। भील चित्रों में जन्म एवं अन्य समारोहों से प्रस्फुटित होने वाले मानव उल्लास को व्यक्त किया जाता है।

चित्र 9.3

चित्र 9.4

भील चित्रों में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार : हाशिए के डिजाइन, हिरण, चूहा, सर्प, पक्षी, हाथी सवार, कार्यरत मानव आकृतियाँ एवं मुर्गा आदि।

9.3 कोलम

कुछ समय पहले तक कोलम चावल के मोटे पिसे आटे से बनाए जाते थे ताकि चीटियों को खाने की तलाश में अधिक दूर न जाना पड़े। चावल का चूर्ण, पक्षियों एवं अन्य छोटे जीवों को भी खाने हेतु आकर्षित करता था, इस प्रकार वह किसी घर में आने हेतु अन्य जीवों को आमंत्रित करता था, अत: यह प्रकृति में समरसता पूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देता है। हिन्दुओं का यह विश्वास है कि घर के दरवाजे पर चावल के आटे से चित्रांकित किए जाने वाले ज्यामितीय रूपाकार एवं आकल्पन घर में लक्ष्मी को आमंत्रित करते हैं एवं बुरी आत्माओं को दूर भगाते हैं। विभिन्न देवी-देवताओं हेतु बनाए जाने वाले कोलम विशिष्ट होते हैं। कोलम कई तरह से बनाए जाते हैं इनमें कुछ ज्यामितीय एवं अंकशास्त्रीय रेखांकनों की भांति बिन्दुओं के ढांचे तैयार किए जाते हैं तो कुछ मुक्त हस्त चित्रित किए जाते हैं। बिन्दु जिन्हें पुल्ली कहा जाता हैं, उन्हें निश्चित क्रम में संयोजित कर लिया जाता है, इन बिन्दुओं को रेखा द्वारा आपस में जोड़कर चित्रात्मक आकल्पन तैयार कर लिए जाते हैं, कोलम में बनाए जाने वाले आकल्पन दो प्रकार के होते हैं। पहले वे, जिनमें बिन्दुओं को सीधी रेखाओं से जोड़कर रूपाकार बनाते हैं तथा दूसरे वे जिनमें घूमी हुई सांकल जैसे आकारों को जोड़कर आश्चर्यजनक रूपाकार तैयार किए जाते हैं। विश्वास किया जाता है कि यह बिन्दु हमारे जीवन में आने वाली चुनौतियों के प्रतीक हैं तथा इनके आस-पास घुमती रेखाएँ हमारी जीवन यात्रा को दर्शाती हैं।

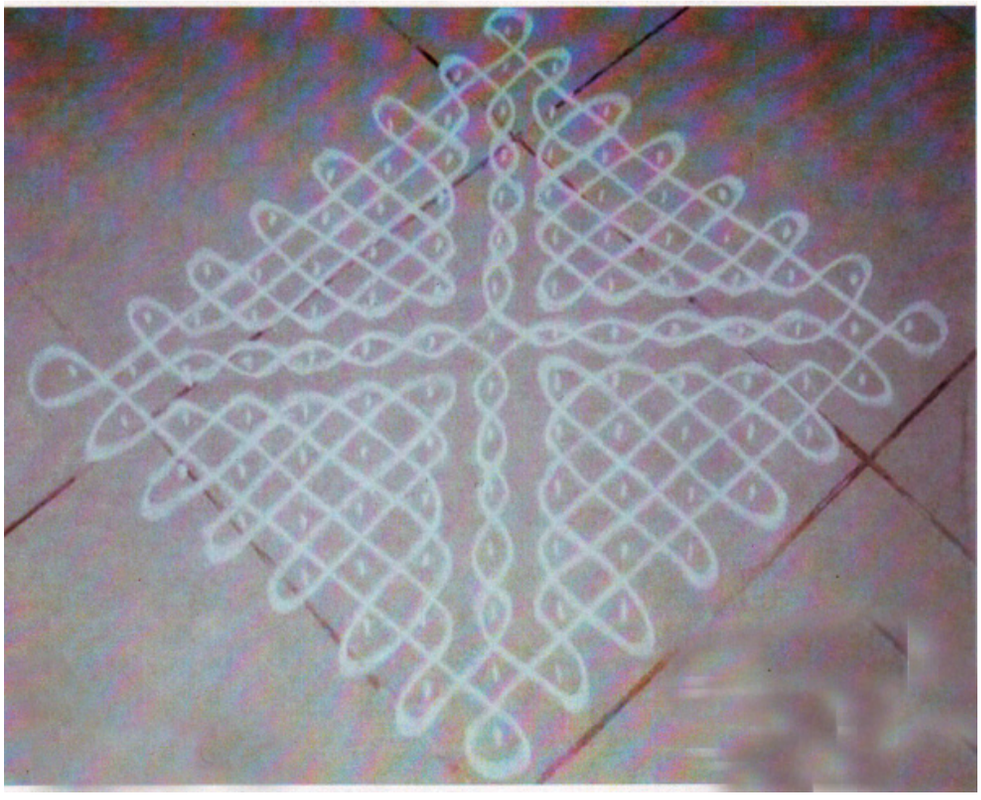

चित्र 9.5

चित्र 9.6

कोलम चित्रों में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार : बिन्दु, बिन्दुओं को जोड़ने वाली सीधी रेखाएँ, बिन्दुओं को जोड़ने वाली घुमावदार रेखाएँ, बिन्दुओं से अलग बनी सीधी एवं घुमावदार रेखाएँ, बिना हाथ रोके एक ही प्रवाह में बनाई गई रेखाएँ।

9.4 आवश्यक सामग्री

मधुबनी, भील एवं कोलम चित्र बनाने हेतु शिक्षार्थी के पास निम्न सामग्री होनी चाहिए :

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा कठोर पट
2. ड्राइंग शीट अथवा कपड़ा
3. ड्राइंग पिन
4. पैंसिल
5. रबर
6. जलरंग
7. रंग मिलाने हेतु रंग पट्टिका
8. जलरंगो के ब्रश
9. काला पेन
10. भूमि पर चित्र बनाने हेतु चावल का चूर्ण एवं कपड़ा
11. रंगों को मिलाने हेतु प्याली

अभ्यास 1

ड्राइंग शीट पर मधुबनी शैली में सूर्यदेव का चित्रण करना।

प्रथम चरण

सबसे पहले ट्रेसिंग पेपर पर वांछित आकल्पन तैयार करते हैं, अब इसे कार्बन पेपर की सहायता से ड्राइंग शीट पर चित्रित करेंगे।

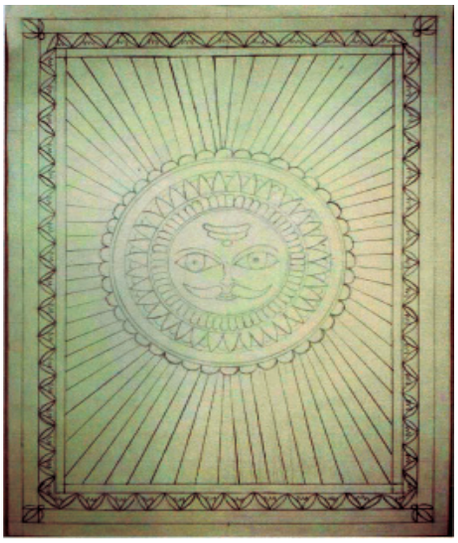

चित्र 9.7

द्वितीय चरण

आप इसमें सूर्य के चेहरे के नाक नक्श चित्रित कर सकते हैं जैसा कि मधुबनी चित्रों में सामान्यत: देखने को मिलता है।

चित्र 9.8

तृतीय चरण

कागज पर बनाए चित्र में पोस्टर कलर का प्रयोग करें। रंगों को सपाट भरें, शेडिंग न करें। पारम्परिक तौर पर नारंगी एवं लाल रंग का ही उपयोग किया जाता है, परन्तु आप इसे आकर्षक बनाने हेतु गुलाबी, बैंगनी, नीला, आदि रंग भी प्रयोग कर सकते हैं। (चित्र 9.9)

चित्र 9.9

चतुर्थ चरण

बाह्य रेखाओं को बनाने हेतु काले रंग का प्रयोग करें। आमतौर पर बाह्यरेखा दोहरी बनाई जाती है तथा उनके मध्य के स्थान को क्रास अथवा छोटी-छोटी सीधी रेखाओं से भर दिया जाता है। चारों ओर हाशिया (बार्डर) अवश्य बनाएँ। यह आपके चित्र को एक नया आयाम देगा। (चित्र 9.10)

चित्र 9.10

काले रंग का प्रयोग कर बाह्य रेखा बनाएँ और 24 घंटे तक सूखने के लिए छोड़ दें। आपका मधुबनी चित्र तैयार है।

अभ्यास 2

ड्राइंग शीट पर एक पिठौरा घोड़ा चित्रित करना

भीलों का विश्वास है कि उनके देवी-देवता घोड़े पर सवारी करते हैं। इसी कारण वे पिठौरा के घोड़े को शुभ प्रतीकों के रूप में चित्रित करते हैं।

प्रथम चरण

चित्रकला का यह एक अत्यन्त सरल रूप है। इसके लिए आपको किसी भी विशेष ज्ञान की आवश्कता नहीं हैं, बस सृजनशील मस्तिष्क एवं थोड़ी सी कला में रूची ही काफी है। पहले ड्राइंग शीट पर वांछित आकृति रेखांकित करें। (चित्र 9.11)

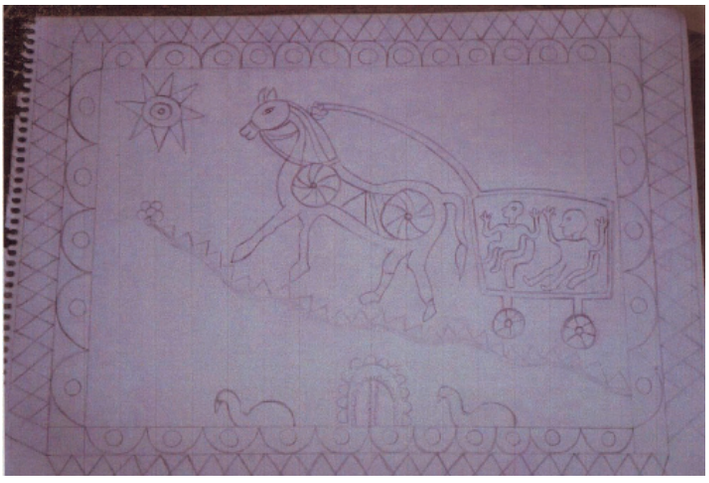

चित्र 9.11

द्वितीय चरण

आप घोड़े की आकृति एवं उसके चेहरे के विवरण वैसे ही चित्रित कर सकते हैं जैसे की भील चित्रों में बनाए जाते हैं। (चित्र 9.12)

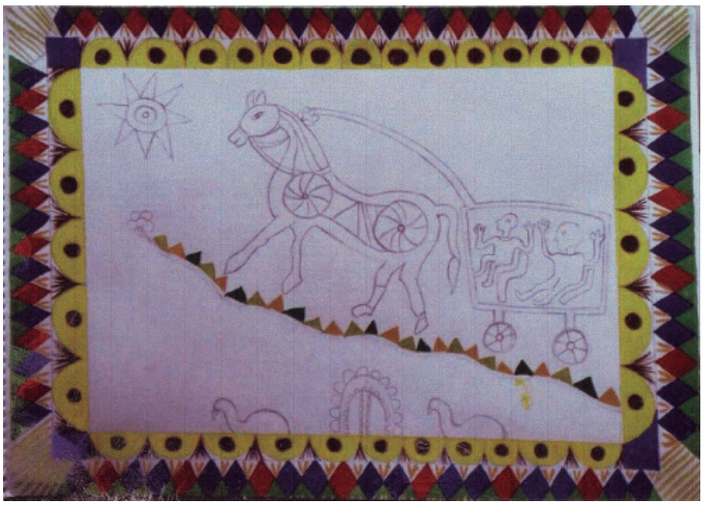

चित्र 9.12

तृतीय चरण

कागज पर सपाट रंग भरें, किसी प्रकार की शेडिंग न करें। पारम्पारिक तौर पर लाल, हरा एवं नारंगी जैसे बुनियादी रंग भरे जाते हैं। (चित्र 9.13 देखें)

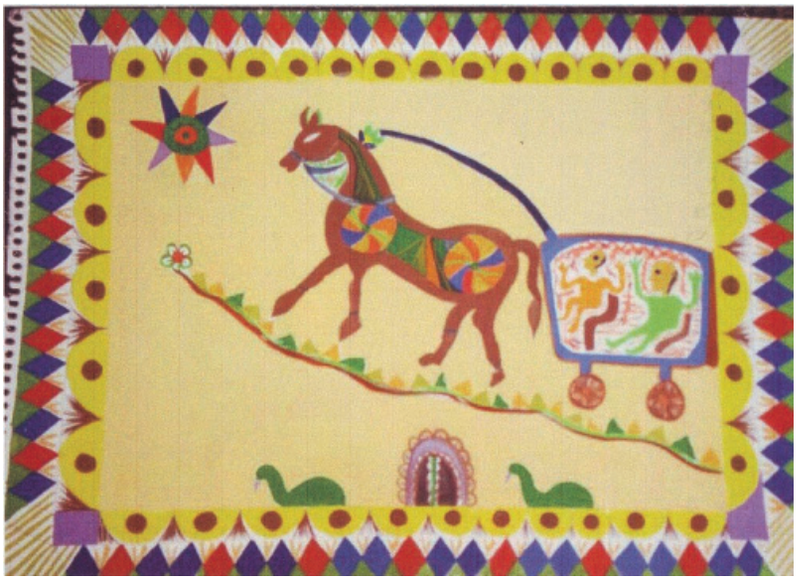

चित्र 9.13

चतुर्थ चरण

घोड़े में रंग भरने के उपरान्त रेखाओं पर समान आकार के बिन्दु सफेद, हरे, नीले एवं पीले रंग से अंकित करें। सम्पूर्ण घोड़े की आकृति में रिक्त स्थान को रंग से भर दें। (चित्र 9.14 देखें)

चित्र 9.14

अब आपके पिठौरा घोड़े का भील चित्र तैयार है।

अभ्यास 3

एक ड्राइंग शीट पर कोलम का चित्र बनाएँ

प्रथम चरण

शीट पर मध्य के स्थान में सात बिन्दु का कॉलम बनाएँ। अब इस मध्य स्थान के दोनों ओर पांच-पांच बिन्दुओं के दो कॉलम बनाएँ। इस बिन्दु समूह के दोनों ओर दोनों सिरों पर एक-एक बिन्दु बनाएँ। अब इन बिन्दुओं के मध्य रेखा घुमाते हुए एक दूसरे पर ओवरलैप करते हुए लूप चित्रित करें। (चित्र 9.15 देखें)

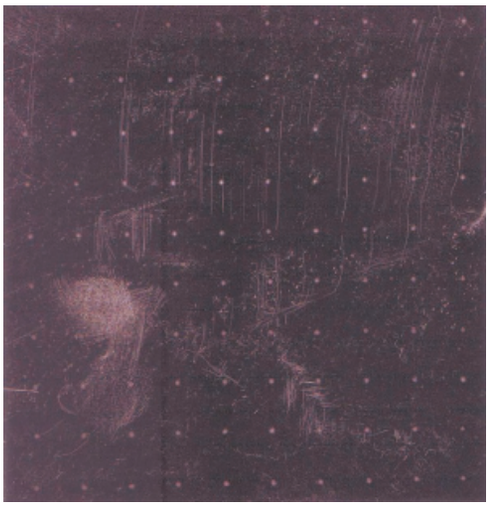

चित्र 9.15

द्वितीय चरण

कोलम में सामान्यत: इन स्वतंत्र बिन्दुओं को घेरते हुए छोटे-छोटे वृत्त बनाए जाते हैं। अन्त में इस बिन्दु समूह को घेरते हुए चार वृत चित्रित कर कोलम पूर्ण किया जाता है। (चित्र 9.16 देखें)

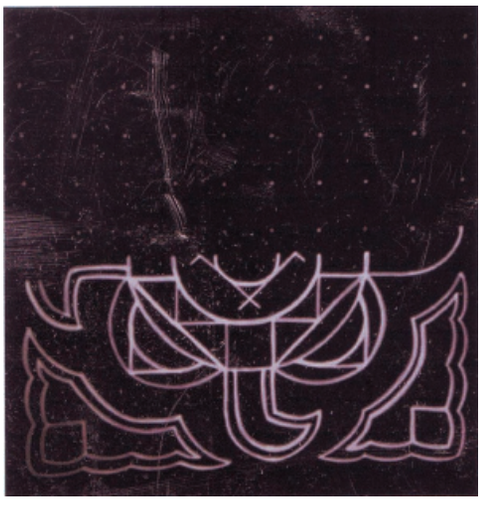

चित्र 9.16

तृतीय चरण

फिर, एक और लूप बनाएँ जो कोलम डिजाइन की परिधि के साथ-साथ पिछले लूपों को जोड़ता है (चित्र 9.17)।

चित्र 9.17

चतुर्थ चरण

कोलम में आमतौर पर ऐसे स्वतंत्र बिंदुओं के चारों ओर छोटे वृत्त खींचे जाते हैं और अंत में कोलम पैटर्न को पूरा करने के लिए उपर्युक्त बिंदुओं के चारों ओर चार वृत्त खींचे जाते हैं (चित्र 9.18)।

चित्र 9.18

अब आपका कोलम चित्र पूरा हो गया है।

आपने क्या सीखा

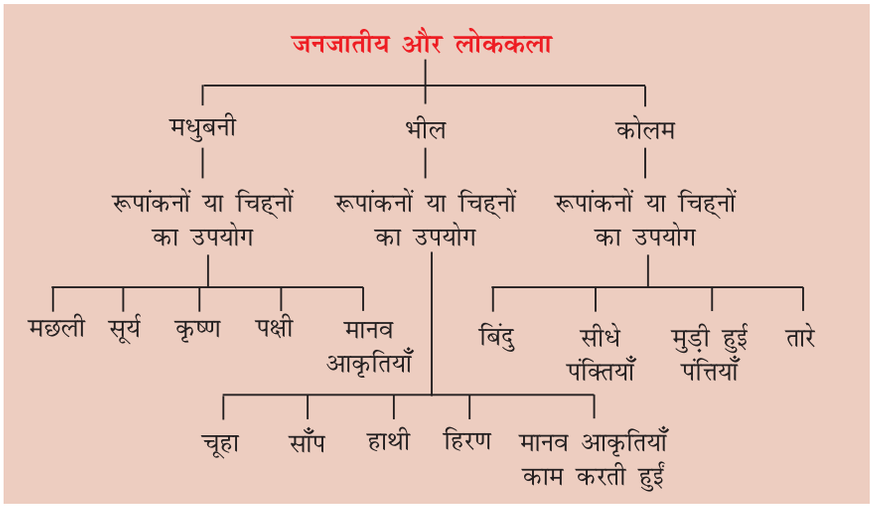

पाठांत प्रश्न

1. दोहरी बाह्य रेखाएँ हाशिए एवं मिट्टी के रंगों का प्रयोग करते हुए, मधुबनी चित्र शैली का एक सामान्य नमूना चुनकर उसे ड्राइंग शीट पर चित्रित करें।
2. भील कला के दिए गए पशु-पक्षी आकृतियों के नमूने से एक चित्र संयोजन तैयार करें एवं उसमें भील चित्रों की तकनीक के अनुसार रंगांकन करें।
3. ड्राइंग शीट पर सीधी रेखाओं की सहायता से एक कोलम बनाएँ।
4. परम्परागत तकनीक का प्रयोग करते हुए भूमि पर एक कोलम चित्र बनाएँ।
5. मधुबनी चित्रों में सामान्यत: चित्रित की जाने वाली विषय-वस्तु एवं आकल्पनों को सूचीबद्ध करें।

शब्दकोश

सटा हुआ	निकटवर्ती
सीमित	प्रतिबंधित
लोककथा	लोक में प्रचलित कथाएँ
धार्मिक कृत्य	धार्मिक समारोह

आलंकारिक	रूप सजाने के लिए
झटका	उबड़ खाबड़
भू-भाग	क्षेत्र/प्रदेश
राज किया	शासन किया
समृद्धि	फलना-फूलना, विस्तार होना आदि
असंख्यक	पौराणिक संकल्पना की आधुनिक व्याख्या
लोकसाहित्य	मिथक तथा प्रसिद्ध व्यक्ति से संबंधित लोक किवदन्तियाँ
फसल कटाई	कृषि कार्य
समारोह	रीति-रिवाज़ का अवसर
दानेदार	खुरदरा
खाका	मूल प्रारूप
एकमात्र	केवल/अकेला
आदिवासी	क्षेत्र विशेष के मूल निवासी।